आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024
Received:16/12/2024; Accepted:20/12/2024; Published:30/12/2024

कवियों का काव्य-संसार एवं छायावाद

- **अर्चना सिंह 'अर्चिरश्मि',**
अवकाश प्राप्त - शिक्षिका एवं प्रशासक।
केंद्रीय विद्यालय संगठन।
ई-मेल: asingh।author@gmail।com
मो. नं.9456280329

अर्चना सिंह 'अर्चिरश्मि',**कवियों का काव्य-संसार एवं छायावाद** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 4/दिसंबर 2024 (300-302)

किसी भी कवि की रचनायें, कल्पनायें, परिकल्पनायें अपने परिवेश से ही विचारों एवं भावनाओं को एकत्र करती हैं जिन्हें वे अपने एकाग्र क्षणों में पुनर्जीवन प्रदान करते हैं। विभिन्न परिवेश, व्यक्तित्त्व और उनसे उपजे अनुभव ही एक-एक कर पन्नों पर उतरने हैं। यह अनुभव किसी से भी प्राप्त हो सकते हैं- अपने,पराये, जाने-पहचाने अथवा अनभिज्ञ-अनजान...।संसार में किसी से...किसी काल-खण्ड से।

कवि की एक दुनिया होती है - एक रचना संसार...।कल्पना का अभ्यंतर संसार...एक समूची दुनिया...एक समूचा लोक...लौकिकता - पारलौकिकता से परे। वहीं उनकी रचनाओं का उदय होता है।

लौकिक व पारलौकिक काव्य के श्रेष्ठतम कवियों में कवियित्री महादेवी वर्मा जी का नाम अग्रणी है। उनकी छायावादी कविताओं में यह बहुधा देखने को मिलता है। उदाहरणार्थ

चित्रित तू मैं रेखा-क्रम, मधुर राग तू मैं स्वर सङ्गम,
तू असीम मैं सीमा का भ्रम, काया-छाया में रहस्यमय!

प्रेयसी प्रियतम का अभिनय क्या!

तुम मुझमें फ़िर परिचय क्या!

- महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा जी का यह काव्य परलौकिक प्रेम और छायावाद की अतिशय गूढ़ भावनाओं का सुन्दर प्रतिपादन है। तुम सम्पूर्ण चित्र और मैं मात्र छोटी-छोटी रेखाओं का क्रम। जो रेखायें मिलकर तुम्हारा रूप साकार कर पाती हैं। तुम असीम, निराकार परमात्मा और मैं काया रूप में तुम्हारी छाया मात्र। जो एक दिन इस भव-सागर को पार कर उस निराकार परम सत्य में विलीन हो जायेगी।

छायावाद के एक प्रसिद्ध कवि हैं कविवर जयशङ्कर प्रसाद जी। उनकी कल्पना, उनकी रचनाओं की गहनता भी गूढ़ है। वह पाठक को उस संसार में ले कर जाता है जहाँ सूक्ष्म और अत्यन्त कोमल भावनायें हैं, जहाँ पाठक भाव विभोर हो निर्मल आनन्द में निमग्न हो जाता है। सुधी-जनों की थाती है उनकी रचनायें।

परमात्मा की सृष्टि, सृष्टि का उद्भव,।।।वह कल्पना उस परमेश्वर की कृति की, जो जगत् पिता ने सृष्टि के शुभारम्भ के लिए की होगी...अद्भुत। अद्भुत है ये कल्पना। उदाहरणार्थ

कौन तुम!संसृति-जलनिधि, तीर तरङ्गों से फेंकी मणि एक,

कर रहे निर्जन का चुपचाप, प्रभा की धारा से अभिषेक!

- कामायनी - श्रद्धा सर्ग, जयशंकर प्रसाद

आह! यह कल्पना, शब्दों का चित्रित परिवेश, शब्द बन्धों का सुन्दर संयोजन कविवर प्रसाद जी ही कर सकते हैं। यही कवि का लौकिक व परलौकिक संसार है और यही उसकी रचनाओं का मूल है...रचना संसार है।

कवि-हृदय कोमल होता है, किन्तु एक कठोर कवच के भीतर सुरक्षित भी। उसका अपना एक संसार है जिस संसार के भीतर पदार्पण निषिद्ध होता है। अघोषित मनाही होती है...।कवि के उस संसार में अनधिकृत प्रविष्टी की। बस वहीं पर सुन्दर रचनाओं का सृजन होता है।

कवि का इहलोक, पारलौकिक रज्जु से बँधा होता है। समग्र प्रीति व स्नेह रूपी साहित्य दे कर समाज से समग्र रूप में स्नेह प्राप्त करता है। सम्पूर्ण दे कर सम्पूर्ण प्राप्त करने का नाम ही प्रभु से एकात्मकता है, एकात्मवाद है। यही छायावाद है। "पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।"

कवि का रचना संसार उसका कल्पना संसार अत्यन्त सूक्ष्म, अत्यन्त महीन होता है। सम्भवतः तब ही वह ऋषि मुनियों की शिक्षा को आत्मसात कर सांसारिक तथा परलौकिक जगत से तादात्म्य स्थापित कर पाता है। फल स्वरुप सुन्दर रचनाओं का जन्म होता है।

अन्त में मेरी छायावादी कविता "शून्य" की कतिपय पंक्तियाँ -

अथाह समुद्र हो और एक बूँद तृष्णा शेष रह जाये !
अगणित वातायन हों एक वातायन अभेद्य रह जाये !
गणना शङ्ख-महाशङ्ख, पद्म-महापद्म हो, किन्तु !
एक शून्य, परम शून्य अजेय रह जाये ।।

****